RNI No. RAJHIN/2014/58645
डाक पंजीयन संख्या JAIPUR CITY/280/2015-17
e-paper : www.srushtiagronews.com

मुख्यमंत्री ने लगाया बादाम का पौधा

सृष्टि एग्रो

वर्ष -4 | अंक-19 | जयपुर 16 से 31 दिसम्बर 2017 | मूल्य - 2 रुपए | पाक्षिक | पृष्ठ-8

राज्य सरकार की दृढ़ इच्छाशक्ति
राज्य का हर किसान आत्मनिर्भर बने : राजे

जयपुर (कासं)। मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे ने कहा कि हाड़ौती की लाइफलाइन परवन सिंचाई परियोजना के नाम पर 50 साल से राजनीति होती रही, हमारी सरकार ने इसे हकीकत में बदलने के लिए दिन-रात एक कर दिया और नतीजा आपके सामने है। परवन का पानी अब जल्द ही हाड़ौती के कोटा, बूंदी और बारां जिले के लाखों किसानों को सरसब्ज करेगा और यहां के सैकड़ों गांवों की प्यास बुझाएगा।

किसान को बना रहे आत्मनिर्भर: श्रीमती राजे ने कहा कि हमारा प्रयास है कि प्रदेश के किसान आत्मनिर्भर बनें। इसके लिए सरकार दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ काम कर रही है। किसानों की मांग पर हमने समर्थन मूल्य पर मूंग, उड़द, सोयाबीन और मूंगफली की खरीद शुरू की। उड़द की बम्पर पैदावार होने के कारण हमने 30 हजार मीट्रिक टन के स्थान पर 60 हजार मीट्रिक टन खरीद का लक्ष्य निर्धारित किया। समर्थन मूल्य पर हमने 1 लाख 74 हजार 232 किसानों से अब तक 1 हजार 41 करोड़ की 3 लाख 18 हजार 357 मीट्रिक टन सोयाबीन, उड़द, मूंग और मूंगफली खरीदी है।

सिंचाई तंत्र को बनाया मजबूत: मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश के सिंचाई तंत्र को मजबूत बनाना हमारी प्राथमिकता रही है। हमने इंदिरा गांधी नहर परियोजना सहित विभिन्न सिंचाई परियोजनाओं पर 5 हजार 633 करोड़ रुपये व्यय कर करीब 50 हजार हैक्टेयर क्षेत्र में अतिरिक्त सिंचाई सुविधा उपलब्ध कराई है। चम्बल नहर प्रणाली में हमने 383 करोड़ से 114 किमी मुख्य नहर और लाइनिंग का काम किया। चम्बल की बांयी मुख्य नहर की मरम्मत के लिए हमने 171 करोड़ रु. और दांयी नहर की मरम्मत के लिए 294 करोड़ रु. स्वीकृत किए। माही, चम्बल, साबरमती, लूनी, सूकली और पश्चिम बनास बेसिन में 540 करोड़ रूपये की लागत से 262 माइक्रो सिंचाई टैंक, 42 माइक्रो स्टोरेज टैंक और 48 चैक डेम बनवाए हैं।

प्रदेश में पूरी हो चुकी खरीफ फसल की बुआई

जयपुर (कासं)। प्रदेश में खरीफ फसलों की बुआई पूरी हो चुकी है। इस बार लक्ष्य से करीब 80 प्रतिशत बुआई हुई है। प्रदेश में 94 लाख हैक्टेयर में खरीफ की बुआई का लक्ष्य था। इसके मुकाबले करीब 75 लाख हैक्टेयर में फसलों की बुआई 7 दिसंबर तक हो चुकी थी। इन दिनों प्रदेश में कड़ाके की सर्दी पड़ रही है। कई जगह मावठ भी हो रही है। प्रदेश में चूरू क्षेत्र में रात का पारा शून्य से नीचे चल रहा है। अजमेर, कोटा, जोधपुर बाड़मेर में रात का पारा 9 डिग्री के आसपास है। प्रदेश में दिन का पारा 23 से 26 डिग्री के आसपास चल रहा है। इससे पाला भी पड़ सकता है। कृषि वैज्ञानिकों ने किसानों को सलाह दी है कि जब पाला पड़ने की संभावना हो, तो फसलों पर गंधक के तेजाब के 0.1 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें। इसके लिए एक लीटर गंधक के तेजाब को एक हजार लीटर पानी में घोलकर एक हैक्टेयर में छिड़कें। छिड़काव का दो सप्ताह तक असर रहता है। अगर इस अवधि के बाद भी शीतलहर पाले की संभावना रहे, तो गंधक के तेजाब के छिड़काव को 15-15 दिन के अंतराल से दोहराते रहें।

सिक्किम की तर्ज पर राजस्थान बनेगा संपूर्ण जैविक खेती वाला प्रदेश: सैनी

सीकर(विसं)। कृषि एवं पशुपालन मंत्री प्रभुलाल सैनी सीकर में जैविक खेती करने वाले किसानों के खेतों का भ्रमण किया, लोगों की समस्याएं सुनीं, अधिकारियों से फीडबैक लिया और कृषि से जुड़े विद्यार्थियों से भी बातचीत की। इस दौरान सर्किट हाऊस में किसानों से बातचीत करते हुए उन्होंने बताया कि राज्य सरकार सिक्किम की तर्ज पर पूरे राजस्थान को जैविक प्रदेश बनाना चाहती है।

फिलहाल राज्य में 65 हजार हैक्टेयर में जैविक खेती हो रही है। 35 हजार किसानों ने जैविक कृषि रजिस्ट्रेशन के लिए आवेदन किया है। प्रत्येक कृषि उपज मंडी में जैविक उत्पाद की खरीद के के लिए दुकान स्थापित की जाएगी। उन्होंने बताया कि राज्य में प्रत्येक ब्लॉक में 50 हैक्टेयर भूमि में जैविक ब्लॉक विकसित किया जाएगा। जैविक खेती में लगातार तीन वर्ष पूरे करने वाले किसानों को सहायता प्रदान की जाएगी। फिलहाल डूंगरपुर जिले को संपूर्ण जैविक जिला बनाने की घोषणा राज्य सरकार द्वारा की गई है। इसके लिए वहां के किसानों को भ्रमण आदि गतिविधियों के जरिए प्रशिक्षण दिया जा रहा है। राज्य में 16 लाख किसानों को सॉयल हैल्थ कार्ड जारी किए गए हैं। जैविक खेती को प्रोत्साहन ही एकमात्र उपाय कृषि मंत्री ने कहा कि केमिकल पेस्टीसाइड्स के उपयोग को रोकने के लिए भारत सरकार ने भी कानून बनाया है कि खेतों में तय मानदंडों से अधिक रासायनिक खाद का उपयोग नहीं हो।

खाद्यान्न आपूर्ति को देखते हुए एक साथ इसके उपयोग को नहीं रोका जा सकता है लेकिन हम यह प्रयास कर रहे हैं कि धीरे-धीरे रासायनिक खाद का उपयोग बंद हो। इसके लिए किसानों की सहभागिता सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। प्रत्येक व्यक्ति को जैविक उत्पाद खाद्यान्न के तौर पर सस्ते सुलभ हों, इसके लिए जैविक खेती को बढावा देना ही एकमात्र उपाय है।

सम्पादकीय

बढ़ी विकास दर

देश की आर्थिक वृद्धि दर में पिछली पांच तिमाहियों से जारी गिरावट का रूख शायद अभी थम गया है। विनिर्माण क्षेत्र में तेजी के साथ चालू वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही में विकास दर (जीडीपी) 6.3 फीसदी रही है। गुजरात चुनाव से पहले यह दर भाजपा और मोदी सरकार के साथ-साथ देश के लिए भी राहतकारी है। पहली तिमाही की वृद्धि दर 5.7 फीसदी रही थी जो लगभग तीन साल का सबसे निचला था। तब मोदी सरकार की आर्थिक नीतियों की चारों ओर से आलोचना हुई थी। तब नोटबंदी और जीएसटी पर सवाल खड़े किए थे। अब 1 जुलाई से जीएसटी लागू होने के बाद पहली बार जीडीपी बढ़ी है। मुख्य सांख्यिकीविद् टीसीए अनंत ने कहा है कि दूसरी तिमाही में जीडीपी वृद्धि दर 6.3 प्रतिशत रहना उत्साहजनक है। सरकार की ओर से जीडीपी वृद्धि के आंकड़े जारी किए हैं। ग्रामीण इलाकों के साथ शहरी इलाकों में मांग बढ़ने से मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर के कामकाज में जबरदस्त उछाल आया है। विनिर्माण, बिजली, गैस, जल आपूर्ति और अन्य उपयोगिता सेवाएं और व्यापार, होटल, परिवहन और संचार और प्रसारण सेवाएं वृद्धि दर के मुख्य कारक हैं। लेकिन रियल एस्टेट में गिरावट जारी है, यह रूख सीमेंट और स्टील के आंकड़ों पर आधारित है। और कृषि क्षेत्र में भी प्रदर्शन काफी खराब रहा है। कृषि, वानिकी और मत्स्य क्षेत्र में वृद्धि दर 2.3 से घटकर 1.7 प्रतिशत रही। उद्योग 5.9 से घटकर 5.8 प्रतिशत, रीयल एस्टेट 6.4 से घटकर 5.7 प्रतिशत और रक्षा एवं अन्य सेवाएं 9.7 से घटकर 6 प्रतिशत पर पहुंच गई। अर्थशास्त्रियों का कहना है कि विकास दर में उछाल संकेत देती है कि अर्थव्यवस्था नोटबंदी और जीएसटी के असर से उबर चुकी है। वित्त मंत्री अरूण जेटली का भी ऐसा ही मानना है। उनका मानना है कि वृद्धि दर आगे और बढ़ेगी। लेकिन कांग्रेस के वरिष्ठ नेता व पूर्व वित्त मंत्री चिदंबरम ने गिरावट पर रोक को ताले संतोषजनक बताया है, लेकिन कहा है कि आगे की तीन-चार तिमाही के आंकड़ों से ही असली तस्वीर साफ होगी। यह बात सही है, फिर भी वित्त मंत्री की उम्मीदों पर हम भरोसा कर सकते हैं। अगर विकास दर 7 से 8 फीसदी पर पहुंचती है तो इससे अच्छी बात कुछ और क्या हो सकती है। लेकिन वित्त मंत्री के आंकलन पर अभी पूरा भरोसा भी नहीं किया जा सकता। यह मान सकते हैं कि विकास दर कम से कम इससे तो नीचे नहीं गिरेगी। यदि विनिर्माण क्षेत्र बेहतर प्रदर्शन कर रहा है तो यह माना जा सकता है भविष्य अच्छा ही है। किन्तु वहीं राजकोषीय घाटा बढ़ना चिंता का विषय है। वास्तव में राजस्व प्रति कम रहने और खर्च बढ़ने से राजकोषीय घाटा अक्टूबर के अंत तक 2017-18 के बजट अनुदान के 96.1 फीसदी तक पहुंच गया है। आंकड़ों के अनुसार खर्च और राजस्व के बीच का अंतर यानी राजस्व घाटा चालू वित्त वर्ष की अप्रैल-अक्टूबर अवधि में 5.25 लाख करोड़ रुपए रहा है। वर्तमान वित्त वर्ष के लिए सरकार ने राजकोषीय घाटे को जीडीपी के 3.2 फीसदी दर रखने का लक्ष्य रखा है। पिछले वित्त वर्ष में सरकार 3.5 फीसदी के राजकोषीय घाटे के लक्ष्य में पाने में सफल रही थी, लेकिन इस साल सीमा पार करता दिख रहा है। देखना होगा कि सरकार इसके लिए क्या-क्या उपाय करती है। वैसे भी विकास दर बढ़े और आय-व्यय के बीच संतुलन न रहे तो यह भी अर्थव्यवस्था के लिए उचित नहीं है। अभी भी कई कारण से अब भी यह नहीं माना जा सकता है अर्थव्यवस्था पटरी पर आ गई है और सब कुछ ठीक-ठाक है। निर्यात के मोर्चे पर पिछली तिमाही जैसी ही कमजोरी दर्ज हुई है। चालू वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही में कृषि क्षेत्र में केवल 1.7 फीसदी की वृद्धि दर्ज की गई, जबकि पहली तिमाही में यह आंकड़ा 2.3 फीसदी था।

दीमक का समन्वित प्रबन्धन

डॉ. रामगोपाल सामोता, डॉ. ममता देवी चौधरी, डॉ. के.सी. कुमावत एवं डॉ. बी.एल. जाट
कीट विज्ञान विभाग, श्रीकर्ण नरेन्द्र कृषि महाविद्यालय जोबनेर (राज.) 303329

दीमक का प्रकोप आम तौर पर सभी फसलों में होता है अत: इसे सर्वभक्षी कीट कहते हैं। यह फसलों को बुवाई से लेकर कटाई तक नुकसान पहुँचाती है। इसका प्रकोप भूमि में कम नमी और अधिक तापमान की स्थिति में तीव्रगति से होता है। दीमक पौधों की जड़ों तथा भूमि से सटे हुये तने के भाग को खाकर खोखला कर देती हैं। फल वृक्षों में दीमक प्रमुख रूप से आम, नींबू, अमरूद, चीकू तथा अनार की शत्रु हैं।

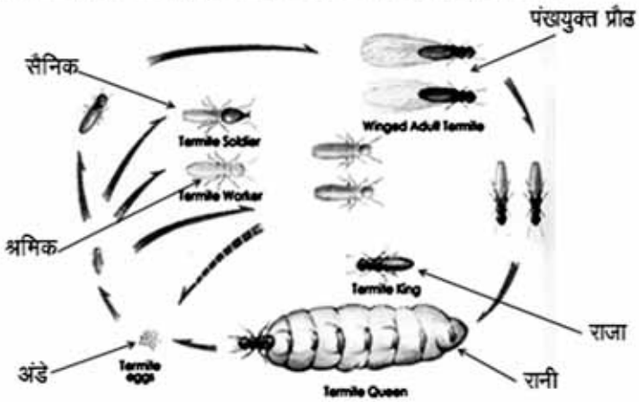

दीमक का जीवन चक्र

क्षति लक्षण: दीमक की चार जातियाँ होतीहैं-राजा, रानी, श्रमिक व सैनिक, जिनमें रानी ही अण्डे देती है। श्रमिक व सैनिक नपुंसक होने के कारण प्रजनन में सक्षम नहीं होते हैं। चूँकि दीमक जमीन में घर बनाकर रहती है एवं मादा अण्डे भी यहीं देती है अत: इसका आक्रमण पौधे के उगने के साथ ही शुरू हो जाता है। दीमक की केवल श्रमिक जाति ही पौधों को नुकसान पहुँचाती है। जिस समय पौधे छोटे-छोटे होते हैं ये पौधे को जमीन के नीचे से काटकर सुखा देते हैं। तनों व शाखाओं पर भी इनका प्रकोप देखने को मिलता है। दीमक रात्री के समय अधिक नुकसान पहुँचाती है। कच्चा गोबर इनका प्रिय भोजन है तथा असिंचित क्षेत्रों में इनका प्रकोप अधिक होता है क्योंकि अधिक पानी में ये सक्रिय नहीं हो पाती हैं। इनकी पहचान के लिए जुताई वाले खेत में कई स्थान पर कच्चा गोबर रख देना चाहिए। यदि मृदा में दीमक है तो 2-3 दिन में गोबर के ऊपर मिट्टी को खोल बनाकर अंदर बैठकर गोबर खाती हुई नजर आयेंगी।

नियंत्रण:

❖फसल की कटाई के बाद खेत की गहरी जुताई करें एवं खेत में बचे हुए फसल अवशेषों को एक जगह इकट्ठा कर जला देवें।

❖फसलों की समय पर सिंचाई करे क्योंकि पानी की कमी होने पर पौधे सूख जाते हैं और दीमक के आक्रमण की सम्भावना बढ़ जाती हैं।

❖नीम की खली का प्रयोग लाभदायक रहता है, क्योंकि इसकी गंध से दीमक दूर भागती हैं।

❖खेतों में अच्छी तरह सड़ी-गली गोबर की खाद का प्रयोग करें क्योंकि गोबर की कच्ची खाद का उपयोग करने से दीमक का प्रकोप बढ़ता है।

❖गन्ने व गेहूँ के स्थान पर प्याज व तम्बाकू की खेती करें।

❖दीमक प्रभावित खेतों में पानी देते समय हींग को एक कपड़े में पोटली बनाकर मुख्य पानी की नाली में बाँध दें। हींग धीरे-धीरे घुलकर पानी के साथ खेतों में जाने से दीमक का प्रकोप समाप्त हो जायेगा।

❖बुवाई करने से पहले खेत में क्यूनालफॉस 1.5 प्रतिशत चूर्ण 25 किलोग्राम प्रति हैक्टर की दर से अंतिम जुताई के समय मिट्टी में अच्छी तरह मिला देवें।

❖मूँगफली में 25 मि.ली. व अन्य फसलों में 2.5-4 मि.ली. क्लोरपाइरीफॉस 20 ई.सी. से प्रति किलो बीज उपचारित करें।

❖खड़ी फसल में दीमक की रोकथाम के लिए चार लीटर क्लोरपाइरीफॉस 20 ई.सी. प्रति हैक्टर की दर से सिंचाई के साथ देवें।

❖फल वृक्षों के तने के पास जमीन में क्यूनालफॉस 1.5 प्रतिशत चूर्ण 25 से 50 ग्राम मिला कर देवें।

वर्ष भर हरे चारे की कमी पूर्ति हेतू 'साईलेज' एवं 'हे'

मनजीत (पी.एच.डी. शोधार्थी)
विस्तार शिक्षा विभाग, कृषि महाविद्यालय
चौ.च.सिंह. कृ.वि. हिसार हरियाणा-125004

पशुपालन में हरे चारे के महत्व को किसान भली-भाँति जानते हैं क्योंकि सस्ते दूध उत्पादन के लिये हरा चारा खिलाना आवश्यक है। वर्ष के कुछ महीनों में जैसे अक्तूबर-नवम्बर व मई-जून में हरे चारे की कमी आ जाने के कारण हम पशुओं को हरा चारा पूर्ण मात्रा में नहीं दे पाते हैं जिसके फलस्वरूप पशुओं के स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ता है और दूध उत्पादन में कमी आती है। किसानों को चाहिये कि जब हरा चारा जरूरत से ज्यादा उपलब्ध हो तो उसे हे तथा साईलेज के रूप में संरक्षित करना चाहिये ताकि हरे चारे की कमी वाले महीनों में प्रर्याप्त मात्रा में हरा चारा मिल सके। जिससे उनका स्वास्थ्य तथा दुग्ध उत्पादन क्षमता अच्छी बनी रहे।

हे क्या है?: चारे वाली फसल को हरी अवस्था में काट कर सुखाया जाता है तो इसे 'हे' कहते हैं।

कैसे बनाये? : 'हे' बनाने के लिये हरी फसल काटने के बाद तब तक सुखाया जाता है जब तक उसमें नमी की मात्रा बिल्कुल ना हो जाये और इसका भण्डारण करने पर इसमें फफूंद न लगे। इसका पता करने के लिए 'हे' को हाथ में लेकर मोड़े अगर वह टुट जाये तो 'हे' तैयार है।

'हे' के लाभ:

❖फसल को उस अवस्था में काटा जाता है जब उस पर फूल आने लग जाये जिससे फसल के साथ खरपतवार भी हरी अवस्था में कट जाते हैं और उनका फैलना कम हो जाता है।

❖जमीन अगली फसल के लिये जल्दी खाली हो जाती है।

❖पशुओं को हरे चारे की कमी वाले दिनों में पौष्टिक चारा मिलता है।

❖'हे' किसी भी फसल जिसका तना मोटा न हो उसका बनाया जा सकता है जैसे जई, बरसीम, रिज़का लोबिया आदि।

साइलेज के लिये उपयुक्त फसलें व फसल काटने की उचित अवस्था: साईलेज किसी भी फसल का बनाया जा सकता है जिसमें घुलनशील शर्करा प्रचुर मात्रा में हों। (8-10) आमतौर पर मक्का, जई, ज्वार, बाजरा, आदि फसलों को प्रयोग किया जाता है। जब उसमें फूटन या भुट्टे आने शुरू हो जाते हैं।

साईलेज के लिये गड्ढा बनाना तथा भने की विधि: साईलेज को आमतौर पर गड्ढों में ही बनाया जाता है। यह कच्चा या पक्का हो सकता है। गड्ढा

कितना बड़ा हो ये इस बात पर निर्भर करता है कि आपके पास कितना हरा चारा है या कितने पशु हैं। क्षमता के अनुसार गड्ढे का आकार इस प्रकार रखें।

लम्बाई	चौड़ाई	गहराई	क्षमता (क्विं.)
5	5	6	22.5
10	5	6	45.00
20	5	6	90

गड्ढा बनाते समय इस बात का ध्यान रखें कि यह थोड़े ऊँचे स्थान पर होना चाहिए ताकि बारिश का पानी इसमें न जा सके। साथ ही यह पशुशाला से ज्यादा दूर ना हो। ताकि साईलेज लाने कम से कम मजदूरी लगे। गड्ढे के कोने गोलाई में होने चाहिए। जिससे इसके अन्दर की हवा को आसानी से निकाला जा सके। भरने से पहले गड्ढे को गोबर और मिट्टी से लीप लें ताकि इसकी मिट्टी साईलेज के साथ न मिल जाये। जरूरत के अनुसार गड्ढे के अन्दर प्लास्टिक की चादर लगाई जा सकती है। अगर गड्ढा पक्का है तो ये सब करने की आवश्यकता नहीं है। गड्ढा भरने के लिये चारे को लगभग 1.3 इंच तक काट लें। फिर उसे भरना शुरू करें। जब लगभग 1 फुट तक भर जाये तो उसे पैरों से अच्छी तरह दबायें। ताकि इसके अन्दर हवा कम से कम रहे। क्योंकि अगर हवा रह गई तो साइलेज अच्छा नही बनेगा। इसी तरह बाकी चारे को भी धीरे-धीरे भरे। गड्ढे में भरे हुई चारे की ऊँचाई जमीन से लगभग 2-3 फुट ऊपर होनी चाहिए। इसे प्लास्टिक की चादर से ढक दें और ऊपर से गोबर व मिट्टी के मिश्रण से 5.6 इंच मोटी परत चढ़ायें ताकि गड्ढे में हवा न जा सके।

साईलेज खिलाना: लगभग 50-60 दिनों में साइलेज तैयार हो जायेगा। इसे आप जरूरत अनुसार पशुओं को खिला सकते हैं। खिलाने से पहले साईलेज के गड्ढे खोले और ऊपर से लगभग 6 इंच की परत को हटा दें क्योंकि यह आमतौर पर खराब हो जाती है। ध्यान रहे साइलेज को धीरे-धीरे करके दूसरे चारों के साथ मिलाकर पशुओं को खिलायें।

खेजड़ी के प्रमुख कीट व बीमारियां तथा उनकी रोकथम के उपाय

थार रेगिस्तान में उगने वाली वनस्पतियों में खेजड़ी का वृक्ष एक अति महत्वपूर्ण वृक्ष है। यह थार निवासियों की जीवन रेखा कहलाती है। यह भारतवर्ष के विभिन्न भागों में विभिन्न नामों से जानी जाती है जैसे दिल्ली में इसें जाटी के नाम से जाना जाता है, पंजाब व हरियाणा में जाँड़, गुजरात में सुमरी, कर्नाटक में बनी, तमिलनाडु में बन्नी, सिन्ध में कजड़ी एवं राजस्थान में इसे खेजड़ी के नाम से पुकारा जाता है। सुखे व अकाल जैसी विपरित परिस्थितियों का इस पर कोई असर नहीं पड़ता बल्कि ऐसी परिस्थितियों में मरु क्षेत्र के जन-जीवन की रक्षा करती है। खेजड़ी की पत्तीयां (लूंग/ लूम) पशुओं के लिए एक अति महत्वपूर्ण पोष्टिक आहार है तथा वे इसे बहुत ही चाव से खाते है।

इसकी सांगरी (फली) बहुत पोष्टिक व स्वादिष्ट होती है। खेजड़ी का वृक्ष दलहन कुल होने के कारण ये भूमि की उर्वरा शक्ति को बढ़ाते है। साथ में ही खेजड़ी के वृक्ष उच्च कोटि की पौष्टिक सांगरी प्रदान करती हैं।

खेजड़ी की पकी सांगरियों में औसतन 8-15 प्रोटीन, 40-50 प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट, 8-15 प्रतिशत शर्करा, 8-12 प्रतिशत रेशा, 2-3 प्रतिशत वसा, 0.4-0.5 प्रतिशत कैल्सियम, 0.2-0.3 प्रतिशत लौह तत्व तथा अन्य सुक्ष्म तत्व पाये जाते हैं जोकि मानव व पशुओं के स्वास्थ्य के लिए बहुत ही गुणकारी हैं। खेजड़ी से उच्च कोटि की गुणवत्ता वाली लूंग (पत्तियाँ) प्राप्त होती हैं जो राजस्थान के शुष्क क्षेत्रें में पशुपालन का मुख्य आधार है।

इस तरह से शुष्क क्षेत्रों में खेजड़ी का वृक्ष जनजीवन व पशुधन के लिए जीवन रेखा का काम करती है। यहां के स्थानीय लोग किसी भी शुभअवसर / त्योहार/ विवाह, आदि पर खेजड़ी की सांगरी की सब्जी बनाना अति उत्तम व अच्छी शकुनभरी मानते है। इसकी लकड़ी से ईमारती फर्नीचर भी बनाये जाते है। इसकी लकड़ी स्थानीय लोगो के लिए ईंधन का मुख्य स्रोत है। खेजड़ी राजस्थान राज्य का राज्य वृक्ष भी है।

वर्षा कम होने तथा भू जल स्तर में आई गिरावट के कारण खेजड़ी की जड़ों में पानी कम होता जा रहा है और जड़ क्षेत्र का तापक्रम बढ़ता जा रहा है। ऐसी परिस्थितियों में जड़ें कमजोर होती जा रही हैं और उनकी रोगरोधी क्षमता भी घटती जा रही है, जिससे जड़ों पर कई तरह की कवक (फफूंदी) व कीट आक्रमण कर देते हैं।

बढ़ते कृषि मशीनीकरण के कारण भी खेजड़ी की जड़ों की प्राकृतिक व्यवस्था को पहुँचती है जो खेजड़ी के सूखने तथा बीमारियों को फैलाने में सहायक का कार्य करता है। खेजड़ी के बड़े वृक्षों का सूखने का जो प्रत्यक्ष कारण जो सामने आए हैं उनमे से प्रमुख कारण हैं- खेजड़ी जड़ छेदक कीट का प्रकोप एवं कवक (फफूंदी) का संक्रमण।

खेजड़ी जड़ छेदक कीट जिसका वैज्ञानिक नाम है 'सेलोस्टर्ना स्काब्रेटोर (कोलियोप्टेरा सिरेम्बाइसिडी)'। इस कीट की लटें खेजड़ी की कमजोर जड़ों की छाल में अन्दर घुस जाती है और जड़ों को खाती हुई उनमें आड़ी-तिरछी सुरंग बनाती है तथा जड़ों के अन्दर घुसती जाती है। अन्दर ही अन्दर जड़ों को खाती रहती है। जब ये लटें बड़ी हो जाती हैं तो वे मुख्य जड़ों को खाने लगती हैं और उनमें भी सुरंग बना डालती हैं।

फिर धीरे धीरे जड़ें खोखली होने से पेड़ की जड़ों का संवहन तंत्र टूटने लगता है। धीरे धीरे ये लटें जड़ों के संवहन तंत्र को खाकर नष्ट कर देती हैं जिससे पौधों में भोजन पानी का आवागमन बंद हो जाता है और पौधा पूर्णरूप से सूख जाता है।

कई बार तो ये कीट सुरंग बनाकर पेड़ के मुख्य वृंत में भी सुरंग बना कर काफी ऊँचाई तक चले जाते हैं और सम्पूर्ण पेड़ को जड़ सहित खोखला कर देते हैं। पेड़ की जड़ों को खोदने पर पता चला है कि इस जड़ छेदक कीट की लटें 3 से 15 मीटर तक की गहराई तक जमीन एवं जड़ों में आराम से रह सकती हैं।

जड़ छेदक मादा कीट जमीन में अण्डा देती हैं जिनसे अनुकूल परिस्थितियों में छोटे छोटे लार्वे निकलते हैं और आगे चलकर लट के रूप में खेजड़ी की जड़ों पर आक्रमण कर देते हैं। ये लटें बाद में प्रौढ़ मादा में बदल जाती हैं और फिर जमीन व खेजड़ी के पेड़ों की जड़ों में अण्डे देती हैं जिनसे समय आने पर लार्वा निकलकर लट में बदल जाते हैं। ये क्रम लगातार चलता रहता है।

खेजड़ी के वृक्ष सूखने का दूसरा कारण है- कवकों (फफूंदी) का खेजड़ी की जड़ों पर संक्रमण। शोध कार्यों से पता चला है कि खेजड़ी की जड़ों पर आक्रमण करने वाली कवकों की प्रमुख प्रजातियाँ हैं, गैनोडर्मा/गाईनोडर्मा, फ्यूजेरियम, रहीजक्टोनिया, आदि।

गैनोडर्मा कवक को देशी भाषा में विषखोपरा या भंफोड़ा भी कहते हैं। सितम्बर-नवम्बर माह में खेजड़ी की जड़ों एवं तने के बीच में से छतरीनुमा आकार के भुफोड़ा बनते दिखाई देते हैं जो गैनोडर्मा कवक के संक्रमण के कारण होते है।

ये भंफोड़े शुरूआत में मुलायम होते हैं परन्तु बाद में कठोर एवं चौकलेट रंग के हो जाते हैं। इस कवक के संक्रमण के कारण पौधों के संवहन तंत्र के समान कार्यों में खराबी होने लगती है और अगले अगस्त सितम्बर के महीने में पेड़ की पत्तियाँ पीली पड़ने लगती हैं और बाद में धीरे धीरे पूरा पेड़ सूख जाता है।

दीमक का आक्रमण भी खेजड़ी के पौधों को सुखाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।

जड़ छेदक कीट का नियंत्रण

खेजड़ी को सबसे ज्यादा नुकसान पहुँचाने वाला कारक है, जड़ छेदक कीट।

इसकी रोकथाम के लिए वर्षाकालीन दिनों में स्वस्थ्य पेड़ों पर एण्डोसल्फान 35 ई.सी. 4-7 मिलीग्राम प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें ताकि जड़ छेदक कीट के प्रौढ़ भृंगों मर जाएं। जड़ों में उपस्थित कीट की लटों, भृंगों आदि को मारने के लिए पेड़ की जड़ों में क्लोरोपाइरीफॉस 20 ई. सी. (15-20 मि.ली. प्रति पेड़ के हिसाब से) व कार्बनण्डजिम 20 ग्राम के साथ कॉपर आक्सीक्लोराइड 40-45 ग्राम प्रति पेड़ के हिसाब से पानी में घोलकर पेड़ के चारों ओर डालें ताकि तने तथा जड़ों में उपस्थित कीट, लटें व भृंगे मर जावें। वर्षाकाल में जड़ छेदक कीट के प्रौढ़ भृंगों को प्रकाशपाश या खेतों में आग जलाकर प्रकाश की तरफ आकर्षित करक, नष्ट कर दें। सूखे एवं संक्रमित पेड़ों को तुरन्त उखाड़कर जला दें ताकि उनमें उपस्थित कीट की लटें एवं कवक जलकर नष्ट हो जावें।

कवक नियंत्रण

कवक (फफूंदी) से होने वाले संक्रमण/ बीमारियों से खेजड़ी के पेड़ों को बचाने के लिए 20 ग्राम बॉवस्टिन तथा 40 ग्राम ब्लाइटोक्स को 20 लीटर पानी में घोलकर खेजड़ी के पेड़ की जड़ों में ड्रेन्चीग करें। इस प्रक्रिया को हर 15 दिन बाद 2-3 बार दोहरावें।

इस तरह कवक के संक्रमण को काफी हद तक रोका जा सकता है। यदि हम बीजों से खेजड़ी के पौधे तैयार करते हैं तो उनको भी बॉवस्टिन या अन्य किसी भी कवकनाशी दवाईयों से उपचारित करके ही बोयें। संक्रमित खेजड़ी को उखाड़ कर जला दें।

साथ में ही संक्रमित खेत की जड़ों/तनों पर बने भंफोडों को भी एकत्रित करके जला दें ताकि कवक का संक्रमण दूसरी स्वस्थ खेजड़ियों पर न हो पायें।

दीमक पर नियंत्रण

खेजड़ी वृक्ष पर दीमक का प्रकोप होने पर भी वे सूख जाते हैं। दीमक के प्रकोप को रोकने के लिए खेजड़ी के तने पर एक-दो फुट की ऊँचाई तक क्लोरोपाईरिफॉस तथा चूने का घोल बनाकर लेप कर दें।

भूमिगत दीमक के नियंत्रण के लिए पेड़ के तनों व जड़ों के पास खाई खोदकर उसमें क्लोरोपाईरिफॉस या फोरेट या एन्डोसल्फान 4 प्रतिशत चूर्ण को मिट्टी के साथ मिलाकर खाई में भर दें जिससे कि दीमक या उसकी लटें मर जावें या दोबारा पैदा नहीं हो पावे।

खेजड़ी के वृक्ष की उचित छंगाई

खेजड़ी के वृक्षों की छंगाई करते समय 4-5 बड़ी शाखाओं को सुरक्षित छोड़ देना चाहिए अर्थात उन्हें छंगना (काटना) नहीं चाहिए

एक दो वर्ष के अन्तराल पर ही पेड़ की छँगाई करनी चाहिए या वृक्ष के निचले दो तिहाई भाग की छँगाई करनी चाहिए और ऊपर के एक तिहाई भाग को सुरक्षित छोड़ देना चाहिए ताकी वृक्ष प्रकाश संश्लेषण की क्रिया द्वारा अपना भोजन नियमित रूप से बनाता रहे।

Dr. S. R. Meena, Dr. Mukesh Kumar Jatav,Dr. S. K. Maheshwari and Dr. B. R. Chaudhary
Central Institue for Arid Horticulture, Bikaner-334006 Rajasthan, (Indian Council of Agricultural Research)

प्याज की खरीद हुई शुरू

5 हजार मैट्रिक टन खरीद का है लक्ष्य : किलक

जयपुर (कासं)। सहकारिता मंत्री अजय सिंह किलक ने बताया कि प्याज उत्पादक किसानों को आर्थिक संबल देने के लिए प्याज की खरीद प्रारम्भ कर दी गई है। 5 हजार मैट्रिक टन प्याज की खरीद मूल्य स्थिरीकरण कोष योजना के तहत नैफेड के लिए की जा रही है। उन्होंने बताया कि राज्य में पहली बार एक साथ पांच कृषि उपज मूंग, उड़द, सोयाबीन, मूंगफली एवं प्याज की खरीद की जा रही है जो एक कीर्तिमान है। राज्य में अलवर जिले में प्याज की खेती बहुतायत में की जाती है इसलिए अलवर स्थित क्रय-विक्रय सहकारी समिति द्वारा प्याज की खरीद की जा रही है। अलवर जिले में लाल प्याज का उत्पादन होता है। प्याज को खुले बाजार से खरीदा जा रहा है और अब तक एक हजार 127 कट्टे प्याज की खरीद की जा चुकी है। समिति द्वारा 43 किसानों से 2875 रुपए से लेकर 3750 रुपए प्रति क्विंटल की दर से प्याज खरीदा गया है। सहकारिता मंत्री ने बताया कि राज्य में समानान्तर रूप से मूंग, उड़द, सोयाबीन एवं मूंगफली की समर्थन मूल्य पर खरीद की जा रही है। उन्होंने बताया कि राज्य के एक लाख 48 हजार से अधिक किसानों से अब तक एक हजार 408 करोड़ रुपए से अधिक की खरीद की जा चुकी है तथा 90 हजार 335 किसानों को 843 करोड़ 38 लाख रुपए का ऑनलाइन भुगतान किया जा चुका है। उन्होंने बताया कि हम लगातार प्रयास कर रहे हैं कि भारत सरकार द्वारा तय समय सीमा में अधिक से अधिक किसानों से तय लक्ष्यों के अनुसार उनकी उपज को तुलवाया जा सके।

जीरे की फसल में 'झुलसा, छाछ्या और उकटा रोग' की आशंका

जयपुर (कासं) अति संवेदनशील मानी जाने वाली जीरे की फसल को बादलों वाले मौसम में रोग लगने का खतरा रहता है। किसी भी तरह का रोग लगने या लक्षण दिखने से पहले ही जीरे की फसल में उपाय शुरू कर देने चाहिए। इससे रोग की अवस्था आने से पहले ही इसका उपचार हो जाएगा। बादलों के कारण सबसे खतरनाक माना जाने वाला झुलसा रोग लग सकता है। इससे पूरी फसल काली पड़कर खराब हो सकती है। इन दिनों फसल में फूल बनने से लेकर दाना बनने की स्थिति बन रही है, इसी दौरान रोग का खतरा रहता है। दुर्गापुरा कृषि अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक और सहायक प्रोफेसर (पादप व्याधि) डॉ. प्रदीप सिंह शेखावत का कहना है कि इसमें झुलसा रोग, छाछ्या रोग उकटा रोग लगने की आशंका रहती है। इसके अलावा कीटों में चेपा का प्रभाव भी इस फसल के लिए नुकसान दायक है।

उकटा रोग के लक्षण: उकटा रोग (विल्ट) मिट्टी बीज जनित रोग है। यह रोग फसल की किसी भी अवस्था में सकता है। यह रोग होने पर हरा-भरा पौधा ऊपर से झुक जाता है। कुछ दिनों में सूखकर नष्ट हो जाता है।

उपचार: इस रोग से बचने के लिए बुआई से पहले बीजोपचार जरूरी है। कारबेंडेजियम एक ग्राम प्रति किलो बीज और ट्राइकोडर्मा (मित्र फफूंद) 6 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचार करना चाहिए।

चेपा (कीट) का असर: जहां चेपा (कीट) का प्रकोप दिखाई दे, वहां डाइमियोएट 30 ई.सी. एक मिलीलीटर प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

झुलसा रोग के लक्षण: बादल होने के दौरान इस रोग की आशंका सबसे अधिक रहती है। शुरुआत में पत्तियों की शिराएं भूरे रंग की हो जाती है, जो शीघ्र ही काले रंग में तब्दील हो जाती है। रोग की उग्र अवस्था में पूरा पौधा सूखकर काला पड़ जाएगा। इसे कालिया रोग भी कहते हैं।

सुरक्षा के उपाय: इस रोग से बचने या निजात पाने के लिए डाइफैनाक्रोनाजोल (सर्वांग कवकनाशी) आधा ग्राम प्रति लीटर की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

छाछ्या रोग के लक्षण: इसमें जीरा के पौधों के ऊपरी भाग पर सफेद पाउडर छिड़के होने जैसे लक्षण दिखाई देते हैं। यह पौध में फ्लोवरिंग के दौरान ज्यादा होता है और सर्वाधिक नुकसान करने वाला साबित होता है।

सुरक्षा के उपाय: इन दिनों अगर छाछ्या रोग के लक्षण दिखाई दें तो उन खेतों में कैराथैन एक मिलीलीटर एक लीटर पानी में घोलकर या घुलनशील गंधक ढाई ग्राम प्रतिलीटर की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

रबी फसल के लिए 31 तक किसानों को कराना होगा फसलों का बीमा

बारां (विसं)। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत 2017-18 के लिए अधिसूचना जारी होने के बाद अब फसल बीमा ऋणी सदस्यों का संबंधित बैंक के माध्यम से बीमा अनिवार्य रूप से किया जाएगा। जिले में इस योजना में क्रियान्वयन के लिए बजाज एलांइस जनरल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड को अधिकृत किया गया है। कृषि विभाग के उपनिदेशक अतिश कुमार शर्मा ने बताया कि गैर ऋणी कृषकों की फसल बीमा की स्वैच्छिक आधार पर होगा। गैर ऋणी एवं बटाईदार कृषक स्वैच्छिक आधार पर अपनी फसलों का बीमा 31 दिसंबर तक अपने निकटतम केंद्रीय सहकारी बैंक, ग्रामीण बैंक, वाणिज्यिक बैंक की शाखाओं एवं सीएससी के माध्यम से करा सकेंगे। कृषि विभाग के उपनिदेशक शर्मा ने बताया कि इस योजना के माध्यम से पटवार मंडल एवं तहसील स्तर पर फसलों को चिन्हित किया गया है।

किन्नू के बाग में वरदान साबित हुई गोमूत्र से बनी दवा

श्रीगंगानगर (विसं)। पास चक 3 एच बड़ा के किसान किशोर खोथ अपने 12 साल पुराने किन्नू के बाग में पिछले सितंबर में जब पौधे जलने शुरू हुए तो उनके माथें पर चिंता की लकीरें खिंचने लगी। उन्होंने बाग बचाने के लिए लाखों रु. खर्च कर डाले, लेकिन बाग को बचाने का उपाय तो कृषि वैज्ञानिकों के पास था, ही उद्यान विभाग ने कोई रास्ता निकाला। इस पर कृषि वैज्ञानिक एवं बागवानी विभाग की टीम ने दौरा कर बाग उखाड़ने की सलाह दी। जलते बाग को बचाने की आखिरी उम्मीद भी खत्म होती देख किशोर पस्त सा हो गए। मायूसी में उसे किसी ने जीव-अमृत से बागों के रखरखाव में लगे रणदीपसिंह कंग को बाग दिखाने की सलाह दी। कंग की गोमूत्र आदि से तैयार

जीव अमृत ने मामूली पैसों में अंतत: बाग को बचा लिया। पिछले साल सितंबर में अचानक किन्नू के दो पौधे समूल सूखकर नष्ट हो गए। किशोर ने उद्यान विभाग के अधिकारियों, पंजकोसी स्थित जाखड़ फार्म के वैज्ञानिकों, स्थानीय कृषि अनुसंधान केंद्र के बागवानी विशेषज्ञों, चौटाला फार्म के बागवानी विशेषज्ञों एवं डबवाली स्थित अखिल भारतीय किन्नू संवर्धन अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिकों को बाग दिखाया। सभी लोगों ने अलग-अलग राय दी। अधिकारियों एवं वैज्ञानिकों ने लाखों रुपए की दवाएं डलवा दी, लेकिन बाग नहीं बचा। आखिर वे चक 20 एफ स्थित जीव अमृत तैयार कर रहे रणदीपसिंह कंग के पास गए। कंग ने 8 हजार रुपए प्रति बीघा लागत से बाग को पुनर्जीवित कर डाला। खोथ ने बताया कि अब वे गोमूत्र, गोबर, बेसन, हरी मिर्च, तंबाकू, धतूरा आदि से तैयार जीव अमृत का साप्ताहिक और पाक्षिक छिड़काव करते हैं। मई के बाद एक भी पौधा नहीं सूखा है। किशोर 15 लीटर जीव अमृत दवा को 1200 लीटर पानी में घोलकर बाग में छिड़काव करते हैं। इससे जली हुई पत्तियां पुन: हरी हो गई हैं। हालांकि बाग में 150 पूर्णतया सूखे हुए पौधे नहीं बचाए जा सके, लेकिन सूख रहे पौधे बच गए हैं।

रोटावेटर : खेती के लिए उपयोगी यंत्र

अलवर (विसं)। खेत तैयार करने के लिए रोटावेटर आजकल सबसे उपयोगी कृषि यंत्र है। इससे कम समय और कम लागत में एक फसल की कटाई के बाद अगली फसल के लिए मिट्टी तैयार की जा सकती है। यह जमीन की नमी को प्रभावी तरीके से उपयोग करने में भी सहायता करता है। रोटावेटर पुराने कृषि यंत्रों से बेहतर तरीके से भूमि को भुरभुरा बनाता है। इसके उपयोग से कृषि कार्य की लागत, समय मजदूरी की बचत होती है। यह खरपतवार को भी नष्ट करता और पुरानी फसल के पौधों-डंठलों को टुकड़ों में काटकर मिट्टी में मिला देता है। रोटावेटर की ब्लेड के पीछे लेवलर लगा होता है, जो भूमि को समतल भी करता जाता है। यह यंत्र गेहूं, जौ, चना, बाजरा के अलावा गन्ना, कपास, धान सब्जियों की खेती में भी उपयोगी है। रोटावेटर पर कीमत का 40 से 50 फीसदी या अधिकतम 28 हजार से 63 हजार रुपए तक अनुदान कृषि विभाग की ओर से दिया जाता है।

एप्पल बेर: एक बार पौधा लगाओ, हर साल फल पाओ

नीमच (विसं)। नीमच के ग्राम अल्हेड़ के किसान श्रीराम पाटीदार ने अपने दो बीघा खेत में बेर के 200 पौधे लगाए और साथ में मिर्च, धनिया, अश्वगंधा की खेती भी की। एक ही जमीन पर चार फसलें हो रही है। उनके बेटे विनोद पाटीदार ने बताया हम महाराष्ट्र के बड़ेल से 55 रुपए में एक पौधा खरीदकर लाए। पौधे लगाने के 18 महीने बाद बेर के पेड़ तैयार हो गए और फसल आई। दिसंबर से फसल आ रही है और अब तक 60 क्विंटल बेर बेच चुके हैं। अभी तो 15 से 20 दिन उपज और आएगी। 100 क्विंटल बेर इस साल बेच देंगे। किसान एक साल में एक बीघा में एक लाख रुपए कमा सकता है। बारिश में अपने आप पेड़ में पत्तियां आ जाएगी और दिसंबर में फल आने लगेंगे। नीमच जिला उद्यानिकी अधिकारी एसके शर्मा का कहना है एप्पल बेर किसानों को खेती के साथ अलग से उपज भी दे सकता है। एक बार बेर का पौधा लगाकर किसान हर साल मुनाफा कमा सकता है। अगेती किस्मों में गोला और काजरी गोला है। इनके फल 15 दिसंबर से पकना शुरू होते है तथा जनवरी के अंत तक चलते

रहते हैं। मध्यम किस्मों में सेव, कैथली, छुहारा, दण्डन, सेन्यूर-5, मुण्डिया, गोमा कीर्ति होती है। इनके फल 15 जनवरी से 15 फरवरी तक रहते है। पछेती किस्मों में उमरान, काठा, टीकड़ी, इलायची प्रमुख होती है।

ऐसे तैयार करें बेर का बगीचा: उद्यानिकी विभाग के अधिकारी नरेंद्र व्यास ने बताया बेर के खेत की तैयारी मई में शुरू करें। 5 मीटर की दूरी पर वर्गाकार विधि से रेखांकन करके गड्ढे खोदे। गड्ढे की ऊपरी मिट्टी में 20-25 किलो देशी खाद और 10 ग्राम फिपरोनिल हर गड्ढे में डाले। जब पहली बारिश हो और गड्ढों की मिट्टी जम जाए तो इसमें पहले से कलिकायन किए पौधों को प्रत्यारोपित करें। प्रत्यारोपण करने के लिए पॉलीथिन की थैली को एक तरफ से ब्लेड से काटकर जड़ों वाली मिट्टी को यथावत रखते हुए पॉलीथिन को अलग करें तथा पौधों को मिट्टी के साथ गड्ढों के मध्य बिंदु पर स्थापित करके पौधों के चारो तरफ की मिट्टी अच्छी तरह दबाकर सिंचाई करें।

कॉलेज छात्रों ने टिश्यू कल्चर से उगाए पौधे

श्रीगंगानगर (विसं)। अब टिश्यू कल्चर तकनीक से पौधों के संवर्धन संरक्षण एवं उनकी संख्या में अभूतपूर्व वृद्धि के लिए केवल कृषि वैज्ञानिकों पर ही निर्भर नहीं रहना पड़ेगा, अब कॉलेज के पोस्ट ग्रेजुएट विद्यार्थी भी टिश्यू कल्चर से पौधों की नई शृंखला खड़ी कर सकते हैं। श्रीगंगानगर के एमडी कॉलेज में बॉयोटेक्नोलॉजी विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. चंद्रा गुरनानी के दिशा निर्देश में स्टूडेंट्स इस पर प्रति वर्ष काम कर रहे हैं। टिश्यू कल्चर ऐसी पद्धति है, जिसे अपनाकर भविष्य में फसल की उत्पादकता, उपज, फलदार एवं सजावटी पौधों की संख्या एक साथ बढ़ा सकते हैं। टिश्यू कल्चर पद्धति से एक पौधे से मात्र कुछ महीनों में हजारों पौधे तैयार हो सकते हैं। यह पद्धति पौधों की रोग रोधक क्षमता भी बढ़ा देती है और इस पर सूक्ष्म जीवों से होने वाली बीमारियों का असर नहीं होता। इस प्रकार यह किसानों के लिए वरदान साबित होने वाली है।

कैसे होती है टिश्यू कल्चर से पौधे की उत्पत्ति

डॉ.चंद्रा गुरनानी उनकी टीम के डॉ. शीनन मुखीजा एवं प्रियंका मदान ने बताया कि यह एक तरह से क्लोनिंग पद्धति है। एमडी कॉलेज में एमएससी बॉयोटेक्नोलॉजी में स्टूडेंट्स विभिन्न पद्धतियों पर काम कर रहे हैं। कॉलेज की भव्य प्रयोगशाला में छात्र पौधे का कोई भी हिस्सा जैसे कलम, पत्ते या केवल एक कोशिका लेकर पहले से तैयार एक मुरासिक और स्कूब (एमएस) मीडिया में इसे उगाते हैं। यह मीडिया 50-50 मिलीलीटर को बोतल या कांच के थर्मस में डालकर पौधे के उगाने वाले हिस्से को इसमें रखते हैं। एमएससी प्री की छात्रा नंदिता शर्मा ने बताया टिश्यू कल्चर के ये पौधे एक चैंबर में रखे जाते हैं, जिसका तापमान 25 डिग्री पर स्थिर रखा जाता है। इन पौधों को 16 घंटे रोशनी 8 घंटे अंधेरा मिलना जरूरी है।

मुख्यमंत्री ने किया सीमेंट प्लान का शिलान्यास

मुख्यमंत्री राजे ने बिलाड़ा में अल्ट्राटेक सीमेंट कंपनी के नए प्लांट का शिलान्यास किया। इस दौरान आदित्य बिड़ला उद्योग समूह के चेयरमैन मंगलम तथा प्रबंधक निदेशक केके महेश्वरी मौजूद रहे।

जयपुर (कासं)। मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे ने पाली जिले की जैतारण तहसील के बलाड़ा गांव में अल्ट्राटेक सीमेंट कम्पनी के नये प्लांट का मुख्यमंत्री कार्यालय से डिजिटल माध्यम से बटन दबाकर शिलान्यास किया। इस दौरान आदित्य बिड़ला उद्योग समूह के चेयरमैन कुमार मंगलम बिड़ला तथा कंपनी के प्रबन्ध निदेशक केके महेश्वरी उपस्थित थे। श्रीमती राजे ने इस अवसर पर कहा कि राजस्थान में देश का सर्वाधिक सीमेंट उत्पादन होता है। उन्होंने कहा कि राज्य मं बिड़ला समूह के चौथे प्लांट के बनने से पाली जिले के युवाओं को रोजगार के हजारों प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष अवसर उपलब्ध होंगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि एक सीमेंट प्लांट को स्थापित करने में लम्बा समय लगता है, लेकिन बिड़ला ग्रुप इस प्लांट को जल्द से जल्द स्थापित कर उत्पादन शुरू करेगा। उन्होंने कहा कि इसके लिए राज्य सरकार की तरफ से सड़क, बिजली आदि की आधारभूत जरूरतों की जल्द से जल्द पूर्ति के लिए पूरे प्रयास किए जाएंगे।

कृषि मंत्री ने वितरित किए प्रमाण-पत्र

मांगरोल (विसं)। कस्बे के मां वैभव लक्ष्मी शिक्षण संस्थान में प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के रोजगार मेले का आयोजन किया गया। संस्थान के निदेशक प्रमेश मीणा ने बताया कि रोजगार मेले का शुभारंभ उमाकांत तिवारी ने किया। इसमें पांच कंपनियों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। वहीं मेले के समापन समारोह के मुख्य अतिथि कृषि मंत्री प्रभुलाल सैनी, वरिष्ठ नागरिक बोर्ड अध्यक्ष प्रेमनारायण गालव, जिला नंदलाल सुमन सहित अनेक लोगों ने भाग लिया। प्रशिक्षण लेने वाले प्रतिभागियों को कृषि मंत्री सैनी ने प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया।

1,31,600 मीट्रिक टन उड़द खरीदेगी सरकार

जयपुर (कासं)। मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे के प्रयासों से केन्द्रीय कृषि मंत्रालय ने राजस्थान में खरीफ सीजन-2017 के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य पर 1,31,600 मीट्रिक टन उड़द की खरीद करने तथा उड़द और मूंग की खरीद का समय बढ़ाकर 120 दिन करने के आदेश जारी किए हैं। इस विषय में केन्द्रीय कृषि मंत्रालय के निदेशक (एमपीएस) ने भारतीय खाद्य निगम, नैफेड और लघु कृषक कृषि व्यापार संघ (एसएफएसी) को पत्र लिखकर निर्देश दिए हैं। श्रीमती राजे ने बारां में राज्य सरकार के 4 वर्ष पूरे होने पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान प्रदेश में उड़द और मूंग की खरीद की समय सीमा बढ़ाये जाने की घोषणा की थी। राज्य सरकार ने केन्द्रीय कृषि मंत्रालय से आग्रह किया था कि खरीफ सीजन-2017 में समर्थन मूल्य योजना के तहत न्यूनतम समर्थन मूल्य पर उड़द और मूंग की खरीद का समय बढ़ाया जाए। केन्द्रीय कृषि मंत्रालय ने इस मांग को स्वीकार करते हुए राजस्थान के लिए उड़द खरीद की मात्रा को बढ़ाकर 1 लाख 31 हजार 600 मीट्रिक टन कर दिया है। साथ ही उड़द और मूंग की खरीद की समय सीमा 29 सितम्बर, 2017 से 120 दिन तक बढ़ा दी है।

रील को 'ऊर्जा संरक्षण पुरस्कार-2017' मिला

जयपुर, (कासं)। राष्ट्रपति रामनाथ कोविन्द ने नई दिल्ली में रील के प्रबन्ध निदेशक ए.के. जैन को 'राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण पुरस्कार- 2017' से सम्मानित किया। यह पुरस्कार कार्यालय एवं बी.पी.ओ. भवन श्रेणी में रील को ऊर्जा प्रबंधन के क्षेत्र में समर्पित प्रयासों के लिए दिया गया है। नई दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित इस समारोह में केन्द्रीय ऊर्जा राज्य मंत्री एवं नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री आर. के. सिंह, केन्द्रीय सचिव (एम.एन.आर.ई.) आनन्द कुमार, सचिव (विद्युत) अजय कुमार भल्ला, एवं अन्य गणमान्य भी उपस्थित थे। राज्य स्तर पर भी रील के प्रयासो को सराहते हुए, कार्यालय भवन एवं उद्योग की श्रेणी में रील को 'राजस्थान ऊर्जा संरक्षण पुरस्कार-2017' से सम्मानित किया गया। रील, भारी उद्योग एवं लोक उद्यम मंत्रालय भारत सरकार की सार्वजनिक क्षेत्र की 'मिनी रत्न' कम्पनी है, जो कि गत 36 वर्षों से व्यवसायिक प्रबंधन एवं लाभ के पथ पर अग्रसर है। कम्पनी देश के ग्रामीण क्षेत्रों में इलैक्ट्रॉनिकी, सूचना प्रौद्योगिकी एवं अक्षय ऊर्जा के क्षेत्र में कार्यरत है। जैन ने बताया कि यह पुरस्कार, वर्ष 2015-16 की तुलना में वर्ष 2016-17 में लगभग एक लाख यूनिट बिजली कि बचत का सुपरिणाम हैं।

मिठास से भरपूर है काला बादशाह अमरूद

भरतपुर (विसं)। उत्तर प्रदेश का मलीहाबाद यूं तो आमों के लिए मशहूर है, किंतु यहां के किसानों ने आम जैसी मिठास वाला अमरूद भी इजाद किया है। इसका नाम दिया है काला बादशाह, क्योंकि इसका रंग काला है। मिठास में डेढ़ गुना ज्यादा होने से इसे अमरूदों का बादशाह माना गया है। यह दुर्मट मिट्टी में तेजी से पनपता है। भरतपुर संभाग में ज्यादा खट्टे फल ज्यादा पनपते हैं।

हर हाल में माफ करांएगे किसानों का ऋण: पायलट

जयपुर (कासं)। कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष सचिन पायलट ने कहा कि कांग्रेस हर हाल में प्रदेश के किसानों के ऋण माफ करवा कर रहेगी। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार ने भ्रष्टाचार की सीमाएं लांघ दी है और मुखिया ने मौन व्रत धारण कर लिया है।

प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय में पत्रकारों से बातचीत में कहा कि उन्होंने आत्महत्या करने किसानों के बिखलते परिजनों को देखा है। सरकार को उनकी सहायता करनी चाहिए। इस सरकार में सैकड़ों मंदिर तोड़े गए, गायें तड़प कर मर गईं। कांग्रेस सरकार बनते ही शिक्षा-चिकित्सा क्षेत्र में किए जनविरोधी निर्णय वापस होंगे। पायलट ने कहा कि वेतन आयोग के पहले कमेटी बनी, कर्जा माफी के लिए कमेटी बनाई लेकिन सरकार की मुखिया ने खुद को बंगला अलॉट कराने के लिए पहले कोई कमेटी नहीं बनाई। चंद भ्रष्ट नेता व अफसरों को बचाने के लिए काला कानून लाकर मीडिया का गला घोंटने की साजिश रची गई। उधर, एरियर समेत विभिन्न मांगों को लेकर जिला कलेक्ट्रेट पर कर्मचारियों के प्रदर्शन में कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष पायलट व प्रतिपक्ष के नेता रामेश्वर डूडी पहुंचे। दोनों ने कर्मचारियों की मांगों को जायज बताते हुए सरकार पर कुशासन का आरोप लगाया।

Hindchem Corproation

SUPPER POTASSIUM HUMATE SHINY FLAKES

ZINK EDTA

SEAWEED EXTRACT FLACKES

N.P.K. WATER SOLUBLE FERTILIZER

AMINO ACID

☞AMINO+HUMIC SHINY BALLS ☞FERROUS SULPHATE19%
☞MAGNESIUM SULPHATE 9.6% ☞FERROUS EDTA12%
☞E.D.T.A. ACID ☞CAMPHOR ☞SODIUM BICARBONATE
☞EDTA DISODIUM ☞CITRIC ACID MONOHYDRATE
☞MANGANESE SULPHATE 30.5%
☞SULPHUR 90% -80WDG ☞BORON 20%
☞BRONOPOL 25% ☞PHOSPHORIC ACID

We Welcome Your Valuable Inquiry
Tel. 022-66998360/61
Fax-022-66450908
Email id: mamta@hindchem.com
Mo. 9004744077

राजस्थान में होने लगा जैतून और किन्वा का उत्पादन

जयपुर (कासं)। अभी तक राजस्थान को जैतून के लिए विदेशों पर निर्भर रहना पड़ रहा था, लेकिन राज्य की जलवायु को देखते हुए कम पानी की फसलों के नवाचार के तहत पश्चिमोत्तर जिलों में जैतून की मौजूदा सरकार ने खेती की विपुल सम्भावनाओं को देखते हुए 712 हैक्टेयर में जैतून का पौधरोपण करवाया। बीकानेर के लूणकरणसर में देश की प्रथम जैतून रिफायनरी की स्थापना 4 करोड़ रुपए की लागत से सरकार ने की, जिसमें 11 हजार 400 लीटर जैतून तेल का उत्पादन किया जा चुका है। राज्य में उत्पादित होने वाले जैतून तेल की पैकेजिंग एवं खुदरा बिक्री

की प्रक्रिया निर्धारित करने के लिए जैतून तेल के लिए बोतल तैयार कर राज ऑलिव ब्राण्ड नाम से जैतून का तेल विक्रय के लिए बाजार में उपलब्ध कराया जा रहा है। हाल ही में मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे ने बस्सी (जयपुर) में जैतून की पत्तियों से जैतून चाय उत्पादन के लिए संयंत्र की पीपीपी मोड पर स्थापना की पहल की और जैतून चाय की पैकिंग तैयार कर अभी दो माह पूर्व ही मुख्यमंत्री ने इसे आमजन के लिए समर्पित किया। मधुमेह या पित्ताशय (गॉल ब्लेडर) की बीमारियों से बचना है तो किन्वा आपके लिए काफी फायदेमंद है। किन्वा का उत्पादन राजस्थान में भी किया जाने लगा है। किन्वा की खेती अभी दो साल से राज्य के चितौड़गढ़ जिले की भदेसर व निम्बाहेडा पंचायत समिति क्षेत्र वर्ष 2015-16 से कृषकों द्वारा सफलतापूर्वक की जा रही है। सरकार ने रबी मे 1000 मिनिकिट वितरित किए गए।

मटर में कैसे करें पौध संरक्षण ?

मटर एक फूल धारण करने वाला द्विबीजपत्री पौधा है। इसकी जड़ में गांठे मिलती हैं। मटर के एक बीज का वजन 0.1 से 0.36 ग्राम होता है। सब्जियों में मटर का स्थान प्रमुख रहा है। इसकी खेती हरी फली (सब्जी), साबुत मटर, एवं दाल के लिये किया होता है। आजकल मटर की डिब्बाबंदी काफी लोकप्रिय हो रही है। इसमें प्रचुर मात्रा में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, फास्फोरस, रेशा, पोटेशियम एवं विटामिन्स पाया जाता है। स्वाद एवं पौष्टिकता की दृष्टि से दलहनी फसलों में से मुख्य फसल है। इस लेख के माध्यम से मटर में पौध संरक्षण करके अधिक उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है

पौध संरक्षण:

मटर की फसल में रोगों में मुख्य रूप से चूर्णिल आसिता, गेरूआ एवं उकटा लगता है वहीं कीटों में मुख्य रूप से फली भेदक, माहो एवं पर्ण सुरंगक नुकसान पहुंचाते हैं।

चूर्णिल आसिता (पाउडरी मिल्ड्यू): इस रोग का प्रकोप शुष्क मोसम में फलियां बनते समय होता है। सामान्यत: जल्दी तैयार होने वाली किस्मों में यह रोग कम लगता है। इस रोग में पत्तियों पर सफेद चूर्ण युक्त धब्बे बनने लगते हैं। रोगग्रस्त पौधा सफेद चूर्ण से ढंका दिखाई देता है जिसके कारण पौधों में प्रकाश संश्लेषण की क्रिया मंद पड़ जाती है एवं पौधे छोटे रह जाते हैं। रोग की तीव्रता होने पर नये फूल नहीं आते हैं एवं फलियों का विकास नहीं होता। फलियों में बनने वाले दाने छोटे रह जाते हैं।

नियंत्रण: जल्दी तैयार होने वाली किस्मों का चयन करना चाहिये। नत्रजन की मात्रा ज्यादा नही देनी चाहिये इससे रोग का तीव्रता बढ़ती है। फसल चक्र अपनाना चाहिये।

बीजों को कार्बेंडाजिम या बाविस्टिन (3 ग्राम/कि.ग्रा. बीज) से उपचारित कर बोना चाहिये। खड़ी फसल में रोग का प्रकोप होने पर घुलनशील गंधक (3 ग्राम) या बाविस्टिन (1 ग्राम) या केलेक्सिन (1 ग्राम) में से किसी एक दवा को प्रति लीटर पानी में घोलकर 15 दिन के अंतराल में 2 बार छिड़काव करना चाहिये। रोग प्रतिरोधी किस्मों जैसे पूसा प्रगति, रचना, अंबिका, शुभ्रा, अपर्णा, अर्का अजीत, फूले प्रिया, आजाद मटर-4, जवाहर मटर-4,5 आदि को लगाना चाहिये।

गेरूआ (रस्ट): रोग का प्रारंभिक लक्षण पौधे के हरे भागों पर पीले, गोल या लंबे धब्बे समूहों में पाये जाते है जो बाद में भूरे रंग में परिवर्तित हो जाते है। यह रोग नम जलवायु वाले क्षेत्रों में अधिक उग्रता से उत्पन्न होता है।

नियंत्रण: फसल चक्र अपनाना चाहिये। रोगरोधी किस्मे जैसे हंस, अर्का अजीत आदि का चयन करना चाहिये। खड़ी फसल में रोग का प्रकोप होने पर घुलनशील गंधक (3 ग्राम) या बाविस्टिन (1 ग्राम) या केलेक्सिन (1 ग्राम) में से किसी एक दवा को प्रति लीटर पानी में घोलकर 15 दिन के अंतराल में 2 बार छिड़काव करना चाहिये या सल्फर पाउडर 25 कि.ग्रा. राख के साथ मिश्रण करके प्रति हेक्टेयर भुरकाव करना चाहिये।

उकटा: इस रोग में प्रभावित खेत की फसल हरा का हरा मुरझाकर सूख जाता है। यह रोग पौधें में किसी भी समय प्रकोप कर सकता है। अगेती फसलों में यह रोग ज्यादा लगता है।

नियंत्रण: गीष्मकालीन गहरी जुताई करके खेतों को कुछ समय के लिये खाली छोड़ देना चाहिये। बीज को ट्राइकोडर्मा विरडी (5 ग्राम/किलो बीज) या कार्बेंडाजिम (3 ग्राम/किलो बीज) से उपचारित करके बोना चाहिये। फसल चक्र अपनाना चाहिए। प्रभावित खड़ी फसल में रोग का प्रकोप कम करने के लिये गुड़ाई बंद कर देना चाहिए क्योंकि गुड़ाई करने से जड़ों में घाव बनते हैं व रोग का प्रकोप बढता है। संक्रमित क्षेत्रों में देरी से तैयार होने वाली किस्मों को लगाना चाहिये।

तुलासिता : इस रोग में पत्तियों की उपरी सतह पर प्रारंभिक अवस्था में पीले रंग के धब्बे दिखाई देते है जिसके नीचे सफेद रूई के समान फफूंदी की वृद्धि दिखाई देती है।

नियंत्रण: इसकी रोकथाम के लिए नीम का काढ़ा या गौमूत्र को माइक्रो झाइम के साथ मिलाकर अच्छी तरह से मिश्रण तैयार कर इस मिश्रण को 250 मि.ली. प्रति पम्प के द्वारा फसल में तर-बतर कर छिड़काव करें।

सफेद विगलन : यह रोग पर्वतीय क्षेत्र में व्यापक रूप से फैलता है इस रोग से पौधों के सभी वायवीय भाग रोग से ग्रसित हो जाते है जिससे पूरा पौधा सफेद रंग का होकर मर जाता है पौधे के रोग ग्रस्त भागों पर सफेद रंग की फफूंदी उग जाती है और बाद में रोग ग्रस्त भागों में ऊपर तथा अन्दर काले रंग के गोल दाने बन जाते है।

नियंत्रण: फसल की बुवाई नवम्बर के प्रथम सप्ताह से पहले नहीं करनी चाहिए, जिस खेत में इस रोग का प्रकोप पिछले सालों अधिक देखने को मिला हो उसमे कम से कम 5 वर्षों तक मटर तथा अन्य दलहनि फसले न बोई जाएँ अर्थात फसल चक्र में बदलाव कर दें , जनवरी के पहले सप्ताह से जब बीमारी के लक्षण फसल में दिखाई पड़े तब नीम का काढ़ा या गौमूत्र को माइक्रो झाइम के साथ मिलाकर अच्छी तरह से मिश्रण तैयार कर इस मिश्रण को 250 मि.ली. प्रति पम्प के द्वारा फसल में तर-बतर कर छिड़काव करें।

झुलसा (आल्टरनेरिया ब्लाईट) : सभी वायवीय भाग पर इसका प्रकोप होता है सर्वप्रथम नीचे की पत्तियों पर किनारे से भूरे रंग के धब्बे बनते है।

नियंत्रण: इसकी रोकथाम के लिए नीम का काढ़ा या गौमूत्र को माइक्रो झाइम के साथ मिलाकर अच्छी तरह से मिश्रण तैयार कर इस मिश्रण को 250 मि.ली. प्रति पम्प के द्वारा फसल में तर-बतर कर छिड़काव करें।

बीज विगलन : इस रोग में बीज अंकुरण से पहले या अंकुरण के समय सड़ना प्रारंभ हो जाते है जिससे खेत में बीजों का अंकुरण भली प्रकार से न होने के कारण पौधों की संख्या काफी कम रह जाती है।

नियंत्रण: इसकी रोकथाम के लिए बीज को बोने से पूर्व नीम का तेल या गौमूत्र या कैरोसिन से बीज को उपचारित कर फसल की बुवाई करें।

कीट नियंत्रण

फली भेदक: देर से बोई गई फसल में इस कीट का आक्रमण अधिक होता है इस कीट की इल्लियां फलियां बनते समय उसमे छेद करके अंदर घुसकर दानों को खा जाती है जिसके कारण संक्रमित फलियां उपयोग करने योग्य नहीं रह जाती।

नियंत्रण: फलियों की तुड़ाई करने के बाद कार्बारिल 50 डब्लू पी. की 2 किलो मात्रा को घोल बनाकर या मेलाथियान 2 मि.ली./ली. पानी के हिसाब से घोल बनाकर प्रति हेक्टेयर छिड़काव करना चाहिये।

माहो: इस कीट का प्रकोप जनवरी के बाद प्राय: होता है यह कीट पत्तियों एवं तनों से रस चूसकर चिपचिपा मधु के समान रस स्त्राव करती है जिन पर बाद में काली फफूंदी रोग विकसित हो जाती है। जिसके कारण पौधों में प्रकाश संश्लेषण की क्रिया मंद पड़ जाती है एवं पौधे छोटे रह जाते है। फलियां कम लगती है एवं विषाणु रोग को फैलाने में भी सहायता करती है।

नियंत्रण: नियंत्रण के लिये रोगार या मेथाइल आक्सी डेमेटान की 2 मि.ली. मात्रा प्रति लीटर पानी के हिसाब से घोल बनाकर 15 दिन के अंतराल में 2 बार प्रति हेक्टेयर छिड़काव करना चाहिये।

पर्ण सुरंगक कीट (लीफ माइनर): इस कीट का आक्रमण पौधे की प्रारंभिक अवस्था में ही शुरू हो जाता है इस कीट की इल्लियां पत्तियों में सुरंग बनाकर हरे पदार्थ एवं क्लोरोफिल को खा जाती है जिससे पत्तियों में सफेद रंग की धारियां बन जाती है। पत्तियां मुरझाकर सूख जाती है एवं फूल/फलियां बहुत कम लगते हैं।

नियंत्रण: सही समय पर बुवाई करना चाहिये। नियंत्रण के लिये रोगार या मेथाइल आक्सी डेमेटान की 2 मि.ली. मात्रा प्रति लीटर पानी के हिसाब से घोल बनाकर 15 दिन के अंतराल में 2 बार प्रति हेक्टेयर छिड़काव करना चाहिये।

हरजिन्द्र सिंह, वी एस आचार्य,
रमेश कुमार सांप और बीरबल नाथ
पीएचडी (कीट विभाग), असिस्टेंट प्रोफेसर
(कीट विभाग), एम. एस.सी (पौध व्याधई विभाग)
कृषि महाविद्यालय, बीकानेर

सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी के कारण होने वाले लक्षण और उनका उपचार

बिमला (विद्यावाचस्पति पादप रोग विज्ञान, आर.ए.आर.आई, दुर्गापुरा, जयपुर), पंचम आर्या (एम एस सी पादप रोग विज्ञान)

सूक्ष्म पोषक तत्व : सूक्ष्म पोषक तत्व वे तत्व होते हैं जिनकी आवश्यकता फसल को बहुत कम मात्रा में होती है, परन्तु इनकी कमी होने पर फसल की उपज, उत्पादन और उसकी गुणवत्ता में कमी आती है।

सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी से प्रमुख (विकार) लक्षण।

लोहा की कमी के कारण -

धान: धान की नर्सरी में लोहे की कमी से उपरी पत्तियाँ पीली या सफेद होने लगती है।

सोयाबीन: नई पत्तियों में शिराओं के बीच कर हिस्सा पीला पड़ता है, जबकि शिराओं के किनारे का भाग हरा बना रहता है। तथा अधिक कमी होने पर पत्तियाँ सफेद पड़ जाती है।

गन्ना: लोहे की कमी से गन्ने की नई पत्तियाँ सफेद पड़ जाती है।

उपचार : 10 ग्राम फेरस, सल्फेट प्रति लीटर मिश्रण का छिड़काव करना चाहिये।

मोलीब्डेनम कमी के कारण

फूलगोभी: पत्तियों के आधार के पास पीलापन दिखाई देता है, और धीरे-धीरे मध्यक्षेत्र के दोनों ओर का भाग मृत हो जाता है, और केवल पत्ती के शीर्ष भाग पर ही हरा बचता है।

दलहनी फसलें: इनमें जड़ों में प्रभावी ग्रन्थियाँ नहीं बनती और बढ़वार समुचित नहीं होती है।

सोयाबीन: पत्तियों की शिराओं के बीच का भाग पीला पड़ जाता है, जड़ों की गुन्थियाँ सख्या में ज्यादा व छोटी बनती है, जिनका रंग हल्का पीला हो जाता है।

उपचार: खड़ी फसल में अमोनियम मोलीब्डेट 2 ग्राम प्रतिलीटर का छिड़काव करना चाहिए।

बोरोन कमी के कारण

फूलगोभी : फूल छोटा और देर से बनता है तना खोखला व भूरा हो जाता है।

गन्ना: नई पत्तियों में शिराओं के बीच अर्ध पारदर्शी धब्बे बनते है और नई पत्तियाँ सूखने लगती है।

आलू : पौधा झाड़ीनुमा हो जाता है, पत्तियाँ मोटी और ऊपर की तरफ मुड़ जाती है, आलू के कन्द फटने लग जाते है और आकार छोटा हो जाता है।

सेब : कच्चे फल गिरने लग जाते है तथा फलों के अन्दर का भाग भूरा पड़ जाता है

मक्का : मक्का में नई पत्तियों पर सफेद लम्बे धब्बे बनते है जो बाद में जुड़कर लम्बी धारी बना लेते है, तथा भूट्टे में दाने नहीं बनाते है।

धान:नई पत्तियाँ पीली पड़ जाती है।

उपचार: मृदा में 10 किग्रा बोरेक्स प्रति हेक्टर प्रयोग करना चाहिये। तथा खड़ी फसल में 2 ग्राम बोरेक्स प्रतिलीटर घोल का छिड़काव करना चाहिये।

मैग्नेशियम कमी के कारण -

गन्ना: गन्ने की पत्तियों की शिराओं के बीच का भाग पीला पड़ने लगता है।

गेहूँ: पत्तियों पर धूसर सफेद धारीदार धब्बे बन जाते है।

उपचार : 25 किलो मैग्निज सल्फेट प्रति हेक्टर का प्रयोग बुवाई से पहले करना चाहिये तथा 5 ग्राम मैग्निज सल्फेट और 21.2 ग्राम चूना 1लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करना चाहिये।

जस्ता कमी के कारण

धान : धान की नर्सरी की पत्तियों पर छोटे-छोटे कत्थई रंग के धब्बे बन जाते है तथा रोपाई के 11-15 दिन के बाद जस्ते की कमी आने पर पौधे की तीसरी पत्ती का रंग हल्का पीला पड़ने लगता है।

गेहूँ : जस्ते की कमी होने पर पौधों की पत्तियों पर पीली धारीयाँ बनती है।

टमाटर : पत्तियों का आकार छोटा होता है। और शिराओं के बीच का भाग हल्का पीला पड़ जाता है।

उपचार: लस्ते की कमी को दूर करने के लिये जिंक सल्फेट 25 किलो ग्राम बुलई मिट्टी में प्रति हेक्टर के हिसाब से प्रयोग करना चाहिये।

ताँबा कमी के कारण -

धान की नई पत्तियों का कुम्हलाना

अमरूद : फलों पर भूरे कत्थई धब्बे पड़ना।

नींबू : सफेद धब्बे बनना व गोंद का जमना

उपचार: 4-5 किलोग्राम कोपर सल्फेट प्रति हेक्टर मृदा में प्रयोग करना बुनवाई से पूर्व तथ खड़ी फसल में 2.5 ग्राम कॉपर सल्फेट और 1.25 ग्राम चूना प्रति लीटर के मिश्रण का छिड़काव करना चाहिये।

जिला स्तरीय कृषि तकनीकी ज्ञान सन्दर्भ केन्द्र

सहायक निदेशक कृषि (वि.)कार्यालय का प्रभारी मंत्री चौधरी ने किया लोकार्पण

जैसलमेर (विसं)। जिला प्रशासन व कृषि विभाग जैसलमेर के तत्वाधान में आयोजित कार्यक्रम में जिले में संचालित विस्तार सुधार कार्यक्रम अन्तर्गत आत्मा परियोजना (कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंध अभिकरण) के तहत निर्मित जिला स्तरीय कृषि तकनीकी ज्ञान सन्दर्भ केन्द्र एवं सहायक निदेशक कृषि (वि.) कार्यालय का लोकार्पण जिले के प्रभारी मंत्री तथा राजस्व एवं उपनिवेशन राज्यमंत्री अमराराम चौधरी ने किया। जैसलमेर जिले में जिला स्तरीय कृषि तकनीकी ज्ञान सन्दर्भ केन्द्र निर्माण स्वीकृति वर्ष 2016 में जारी की जाकर राजस्थान राज्य कृषि विपणन बोर्ड जोधपुर को 85 लाख की राशि आवंटित कर भवन निर्माण करवाया गया है, सहायक निदेशक कृषि (वि.) जैसलमेर कार्यालय का निर्माण 2016 में राजस्थान राज्य कृषि विपणन बोर्ड जोधपुर को 21 लाख की राशि आवंटित कर भवन निर्माण करवाया गया है। प्रभारी मंत्री चौधरी ने कहा कि जिले के किसानों को इस तकनीकी ज्ञान केन्द्र से कृषि के क्षेत्र में किये जा रहे नवाचारों, कृषक प्रशिक्षण, कृषक गोष्ठियां, कृषक भ्रमण, फसल प्रदर्शन आदि कार्यक्रम का अधिकाधिक लाभ उठाकर वर्ष 2020 तक कृषि आय दुगुना करने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान देने का आग्रह किया गया। कार्यक्रम में जैसलमेर विधायक छोटूसिंह भाटी, जिला प्रमुख श्रीमती अंजना मेघवाल, नगर विकास न्यास अध्यक्ष डॉ. जितेन्द्रसिंह, नगर परिषद् सभापति श्रीमती कविता कैलाश खत्री, जिला कलक्टर कैलाश चन्द मीना, अतिरिक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी रामेश्वर लाल मीना एवं अन्य विभागों के अधिकारीयों सहित कृषि एवं उद्यान विभाग के समस्त अधिकारी उपस्थित रहे। इस मौके पर जिले के विभिन्न क्षेत्रों से पधारे कृषकों को विभागीय योजनाओं की जानकारी दी गई। कार्यक्रम के अन्त में उपनिदेशक कृषि (विस्तार) जिला परिषद् जैसलमेर राधेश्याम नारवाल ने धन्यवाद दिया।

कृषि सलाह किसान भाई ध्यान देवें

मटर: मटर की फसल में फली छेदक लट का प्रकोप दिखाई देने पर मैलाथियॉन 50 ई.सी. एक मि.ली. का प्रति लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करें ।

मूली एवं गोभी: गोभी एवं मूली में मोयला (एफिड) कीट के प्रकोप की सम्भावना है । मोयला कीट के नियत्रंण हेतु डाईमिथोऐट 30 ई.सी. या मिथाइल डिमेटोन 25 ई.सी. का एक लीटर प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

सरसों एवं जौ: सरसों एवं जौ की फसल में मोयला कीट के प्रकोप पर नजर रखे। मोयला कीट का प्रकोप दिखाई देते ही मिथाइल पैराथियॉन 2 प्रतिशत चूर्ण का 25 किलो प्रति हैक्टेयर की दर से भुरकाव करे ।

गेहूँ : देरी से बोये जाने वाले गेहूँ की बुवाई का समय है। राज.3765, राज.3077, राज.4083 एवं राज.4238 देरी से बाये जाने वाले गेहूँ की उन्नत किस्में है। बीज दर 125 किलो प्रति हैक्टेयर रखे। बुवाई से पूर्व बीजों को 2 ग्राम थाइरम या 2.5 ग्राम मैन्कोजेब तथा फिप्रोनिल 5 एस. सी. 6 मि.ली से प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करें ।

आंवला: अनार की तितली का आंवला में प्रकोप दिखाई देने पर फूल व फल बनते समय कार्बोरिल 50 डब्ल्यू पी. 3 ग्राम का प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करे। अनार की तितली के प्रकोप से फल सड़ कर गिरने लगते हैं ।

पपीता: पपीते की फसल में पर्ण कुंचन व मोजेक रोग के प्रकोप की सम्भावना है । इन रोगों के लक्षण दिखाई देते ही रोग ग्रस्त पौधों को उखाड़ कर नष्ट कर देवें तथा रोग के प्रसार को रोकने हेतु कीटनाशी डाइमिथोऐट 30 ई.सी. या मिथाइल डिमेटॉन 25 ई.सी. एक मि.ली. प्रति लीटर पानी के घोल का छिडकाव करें। इन दवाओं का प्रयोग फल लगने से पहले करें तथा फल लगने के बाद मैलाथियॉन 50 ई.सी का 2 मि.ली. प्रति लीटर पानी का घोल बना कर छिड़काव करें।

सृष्टि एग्रो परिवार आपका स्वागत करता है

सदस्यता फार्म

सदस्य का नाम : .....

संस्था का नाम : .....

पूरा पता : .....

ग्राम : .....**तहसील** .....

जिला ..... **राज्य** ..... **पिन कोड** ☐☐☐☐☐☐

दूरभाष कार्य : ..... **निवास** .....

सदस्यता राशि

एक वर्ष : 151 ☐ **तीन वर्ष 351** ☐ **पांच वर्ष 501** ☐

कृपया हमें/मुझे सृष्टि एग्रो की सदस्यता प्रदान कर नियमित रूप से उक्त पते पर पत्रिका भेजने की व्यवस्था करें।

सदस्यता राशि नकद/मनीऑर्डर/चेक/डिमांड ड्राफ्ट द्वारा राशि रुपए (अंकों में) शब्दों में .....

बैंक का नाम ..... **ड्राफ्ट चेक क्रमांक** ..... **दिनांक** .....

स्थान ..... **प्रतिनिधि का नाम** ..... **हस्ताक्षर सदस्य** .....

दिनांक .....

सृष्टि एग्रो

ग्रामीण विकास का सम्पूर्ण पाक्षिक समाचार पत्र

307, लिंकवे इस्टेट, लिंक रोड मालाड़ (प), मुंबई-400064 Tel. 022-66998360/61, Fax : 022-66450908,
E-mail : info@srushtiagronews.com, website : www.srushtiagronews.com

एवं हस्ताक्षर

एवं संस्था सील

मुख्यमंत्री ने लगाया बादाम का पौधा

झुंझुनूं (विसं)। श्रीमती मुख्यमंत्री वसुन्धरा राजे ने झुन्झुनूं खेतड़ी नगर के निदेशक आवास परिसर में बादाम का पौधा लगाया। उन्होंने करीब 5 साल पहले इसी परिसर में उनके द्वारा लगाए गए बॉटल ब्रुश के पौधे को भी देखा और खुश हुई।

निदेशक आवास पर श्रीमती राजे के जयपुर प्रस्थान से पहले भारतीय मजदूर संघ जिला झुन्झुनूं के प्रतिनिधियों ने मुलाकात कर भवन निर्माण श्रमिकों को सरकार की ओर से विभिन्न सुविधाओं का लाभ दिलाए जाने के संबंध में ज्ञापन दिया। उन्होंने खेतड़ी स्थित कॉपर संयंत्र में नई टेक्नोलॉजी का प्लांट लागने के साथ ही आंगनबाड़ी एवं अन्य कार्य करने वाली 6 हजार महिलाओं का मानदेय बढ़ाए जाने तथा स्थाई करने की मांग रखी। मुख्यमंत्री ने भारतीय मजदूर संघ की मांगों पर सहानुभूति पूर्वक विचार किए जाने का आश्वासन दिया।

2 सिंचाई में तैयार होगा 'पूसा बीट-8777'

गेहूँ की उपज लगातार बढ़ रही है। यह वृद्धि गेहूँ की उन्नत किस्मों तथा वैज्ञानिक विधियों से हो रही है। यह बहुत ही आवश्यक है कि गेहूँ का उत्पादन बढ़ाया जाय जो कि बढ़ती हुई जनसंख्या के लिए आवश्यक है। गेहूँ की खेती पर काफी अनुसंधान हो रहा है और उन्नत किस्मों के लिए खेती की नई विधियां निकाली जा रही है। इसलिए यह बहुत ही आवश्यक है कि प्रत्येक किसान को गेहूँ की खेती की नई जानकारी मिलनी चाहिए जिससे वह गेहूँ की अधिक से अधिक उपज ले सके। किसान भाईयों गेहूं की एक अनोखी किस्म का अनुसंधान किया गया है जो कि मात्र 105 दिनों में ही तैयार हो जाएगी। यह किस्म केवल दो सिंचाई में ही तैयार हो जाएगी। इसे प्रमाणन के लिए सीवीआरसी में भेजा गया है। इस किस्म को भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (आईएआरआई) इंदौर ने विकसित किया है। इसमें मानव शरीर के स्वास्थ्य के लिए आवश्यक मात्रा में प्रोटीन, जिंक, आयरन, कैरोटीन आदि मौजूद हैं। जिसके कारण मनुष्यों में एनीमिया रोग से लड़ने की प्रतिरोधक क्षमता प्रदान करता है। इसे पूसा बीट 8777 नाम की पहचान दी गई है। कम सिंचाई वाले क्षेत्रों में यह अधिक पैदावार देगी। यह एक एकड़ में 18 क्विंटल तक उपज दे सकती है। वैज्ञानिक काफी समय से गेहूं में लगने वाले मुख्य रोग जैसे पीला रतुआ, गेरूआ रोग और काला कंडुआ रोग दूर करने के लिए प्रयासरत थे।

रेतीली जमीन के लिए उपयुक्त गेहूं का नया बीज 'राज-4238'

श्रीगंगानगर (विसं)। गेहूं के लिए सरकारी स्तर पर नया बीज आया है, जो बदलते मौसम में भी उत्पादन और बेहतर क्वालिटी देगा। इतना ही नहीं रेतीली जमीन पर भी इस बीज से उत्पादन होगा। अनेक जगहों पर ट्रायल के बाद इसकी खूबियां सामने आई। इस किस्म में फसल की बीमारियों से लड़ने की क्षमता भी है। सर्द-गर्म मौसम भी इसे ज्यादा प्रभावित नहीं करेगा। राज्य बीज निगम ने इस साल किसानों के लिए गेहूं का नया बीज उपलब्ध कराया है। इसमें राज-1482 एवं राज-3077 जैसे गुण हैं। यही नहीं दोनों के विकल्प के तौर पर इलाके में बोया जा रहा राज-4238 ऐसा बीज है जो रेतीली भूमि में भी अच्छा उत्पादन दे सकता है।

पाला पड़ने पर किसानों को सलाह

जयपुर (कासं)। प्रदेश में अब अच्छी सर्दी पड़ रही है। मौसम वैज्ञानिकों का कहना है कि अभी सर्दी और बढ़ेगी। जितनी सर्दी पड़ेगी, उतनी ही फसल अच्छी होगी। कृषि वैज्ञानिकों ने किसानों को सलाह दी है कि जब पाला पड़ने की संभावना हो, तो फसलों पर गंधक के तेजाब के 0.1 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें। इसके लिए एक लीटर गंधक के तेजाब को एक हजार लीटर पानी में घोलकर एक हैक्टेयर में छिड़कें। छिड़काव का दो सप्ताह तक असर रहता है।

सृष्टि एग्रो
विज्ञापन हेतु
सम्पर्क करें
मोबाइल : 7728897568
jaipur@srushtiagronews.com
विज्ञापन मात्र
एक
कॉल की दूरी पर

उदित ओवरसीज प्रा.लि.

राजस्थान सरकार द्वारा उर्वरक अब मान्यता प्राप्त दरों व अनुदान पर उपलब्ध

फर्टिलाइजर
1. जिंक सल्फेट 21 प्रश.
2. जिंक सल्फेट 33 प्रश.
3. फेरस सल्फेट 19 प्रश.
4. कॉपर सल्फेट 24 प्रश.
5. मैग्नीशियम सल्फेट 9.6 प्रश.

बायो फर्टिलाइजर
1. राइजोबियम पाउडर
2. एजेटोबेक्टर पाउडर
3. पी.एस.बी. पाउडर

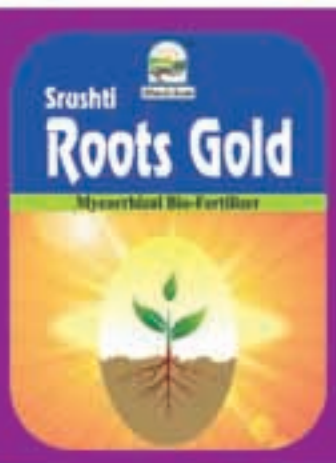

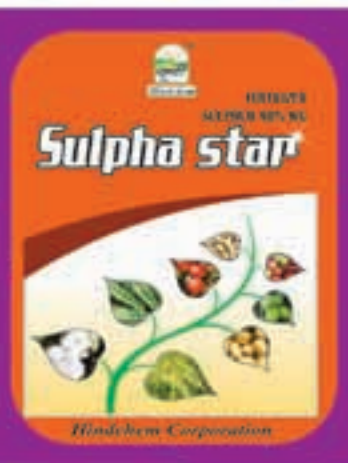

FERTILIZER
- SRUSHTI HIZINC (MICRONUTRIENT MIXTURE)
- ZINC EDTA 12%
- FERROUS EDTA 12%
- BORON 20%
- COPPER SULPHATE 24%
- SULPHUR 90% WG

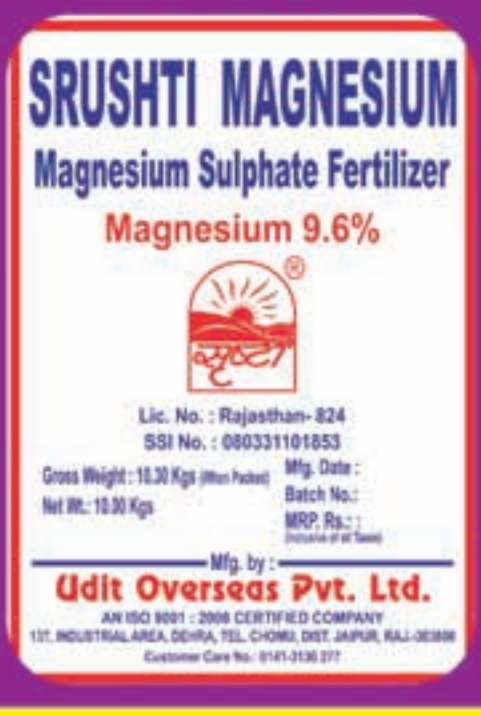

BIO FERTILIZERS
- MYCORRHIZA (ROOTS GOLD)
- AZOSPIRILLUM
- PHOSPHATIC SOLUBILISING BACTERIA (PHOS UP)
- POTTASIUM MOBILIZING (POTA RISE)

WELCOME INQUIRY Contact : 7975653498 (Rajesh Sharma)

137, Industrial Area Dehra, Tehsil Chomu, Dist, Jaipur

स्वामी : सुरेश जी. शर्मा, प्रकाशक एवं मुद्रक विकाश शर्मा की ओर से जयपुर प्रिंटर्स, सी-565, 4-सी स्कीम न्यू लोहामण्डी रोड, सीकर रोड जयपुर से मुद्रित किया गया और प्लाट नं. बी-82 नीलगिरी कॉलोनी, नई अनाज मंडी के पीछे, विश्वकर्मा एरिया, जयपुर 302039 यहां से प्रकाशित किया। सम्पादक : सुरेश जी. शर्मा सत्यापित शीर्षक क्रमांक RAJHIN/2014/58645 : Tel. 0141-3130277, Mob. 7728897568, E-mail : jaipur@srushtiagronews.com